समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२० • वर्ष : २४ • अंक : ४ (निरंतर अंक : २८०)
• भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

ऐसे करुणा के सागर थे शाहों के शाह लीलाशाह !

भगवत्पाद पूज्यपाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का
महानिर्वाण दिवस : २३ नवम्बर पृष्ठ ५

आपकी भी संतों जैसी दिवाली हो ! पृष्ठ ६

संत-महापुरुषों की युक्तियों को अपनाकर ऐसे बन जाओ कि तुम जहाँ पग रखो वहाँ प्रकाश हो जाय । तुम जहाँ जाओ वहाँ का वातावरण रसमय, ज्ञानमय हो जाय । फिर वर्ष में केवल एक ही दिन दिवाली होगी ऐसी बात नहीं, तुम्हारा हर दिन दिवाली हो जायेगा... हर प्रभात नूतनता की खबरें देगा... । - पूज्य बापूजी

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

दीपावली पर्व
१३ से १६ नवम्बर

माँ महँगीबाजी के पावन संस्मरण

ब्रह्मलीन मातुश्री माँ महँगीबाजी का
महानिर्वाण दिवस : ११ नवम्बर ९

महान बनानेवाली १२ सरल बातें ३

दिव्य औषधीय गुणों से युक्त पौष्टिक श्रीखंड १५

मुंडन व कर्णवेध संस्कार क्यों ? १२

उठिये ! सम्पूर्ण शक्तियाँ आपकी सहायता के लिए उत्सुक हैं

वासनाएँ प्रबल हैं। मन चंचल है। इन्द्रियाँ बहिर्मुख हैं। प्रलोभन अगणित हैं। पाँव डगमगा जाते हैं। बाधा पिशाची के समान सामने खड़ी हो जाती है। मनुष्य के मन में एक प्रकार की उदासी अथवा निराशा छा जाती है। उसको ऐसा लगने लगता है जैसे मैं परमात्मप्राप्ति के मार्ग से च्युत हो गया हूँ। बस, यहीं सावधान रहने की आवश्यकता है।

जो मार्ग में चलता है उसीके पाँव फिसलते हैं। कभी-कभी गिर भी पड़ता है। यह कोई अनहोनी नहीं है, अपराध नहीं है। गिर के न उठना अपराध है। आगे न बढ़ना अपराध है। इसलिए आप बाधाओं से घबराइये मत। उदास-निराश मत होइये। आपकी आत्मशक्ति अनंतशक्ति के साथ जुड़ी होने से भविष्य की सम्भावना अत्यंत उज्ज्वल है। उसको कोई पराजित नहीं कर सकता। उत्साह के साथ आगे बढ़िये। लक्ष्य की प्राप्ति हुई, अब हुई - ऐसा निश्चय करके प्रतिपल, प्रतिपद लक्ष्य के सामीप्य का अनुभव कीजिये। जो आप चाहते हैं वह कोई दूसरा नहीं है। आप ही हैं। आपके प्रयास का एक क्षण या कण भी व्यर्थ नहीं जाता। वह आपको पूर्णता से मिलता है।

हाँ, तो लक्ष्य के प्रति आप कितने सच्चे हैं, कितने सजग हैं ? आपकी उत्कंठा, व्याकुलता कितनी गहराई तक, सूक्ष्मता के किस स्तर तक पहुँच चुकी है ? वह कौन-सा प्रतिबंध है जो आप और आपके लक्ष्य के बीच में आवरण बना हुआ है ? आप उन्मत्त के समान पूरी शक्ति से एक छलाँग भरिये। वह दूरी, वह देरी, वह दूसरापन जो आप और आपके लक्ष्य के बीच में बाधा बना हुआ था, मिट जायेगा। वस्तुतः वह था ही नहीं। मन का ही अटकाव है। यह भ्रम का ही एक क्रम है। इसको दूर करने में किसी भी श्रम या प्रयास की आवश्यकता नहीं है। **जब आप इसको दूर करना चाहेंगे तब समग्र ईश्वरीय शक्ति आपकी शक्ति के अनुकूल हो जायेगी और यह अंधकार ही एक महान प्रकाश के रूप में प्रकट हो जायेगा।** उठिये, जागिये ! तत्पर हो जाइये। सम्पूर्ण शक्तियाँ आपकी सहायता के लिए उत्सुक हैं, उन्मुख हैं।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २४ अंक : ४ (निरंतर अंक : २८०)
प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२० मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org, *ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- महान बनानेवाली १२ सरल बातें..... ४
- ऐसे करुणा के सागर थे शाहों के शाह लीलाशाह !... ६
- ऋषि प्रसाद पढ़ने से नरकमय जीवन हुआ परिवर्तित - सुरेश कुमार.....७
- आपकी भी संतों जैसी दिवाली हो !..... ८
- ऐसी सूझबूझ का फायदा लेकर वे सेवा, सत्कर्म में लगे रहते हैं.....१०
- कीमती पाठ..... ११
- माँ महँगीबाजी के पावन संस्मरण - सजनी बहन...१२
- पूज्य बापूजी ने तो था पहले ही बताया.....१३
- जैसा सोचोगे वैसे ही बनोगे.....१५
- मुंडन संस्कार क्यों ?.....१६
- कर्णवेध संस्कार क्यों व कैसे ?..... १७
- मंथरा के प्रभाव से मुक्त कैसे हों ?..... १७
- इन लक्षणों को आत्मसात् कर... - समर्थ रामदासजी..... १८
- स्वास्थ्य के कुछ सरल प्रयोग..... २०
- ब्रह्मज्ञान होने पर कैसा अनुभव होता है ?.....२२
- शक्ति का सदुपयोग और दुरुपयोग किसमें ?.....२३
- ऐसा परीक्षण करोगे तो कल्याण हो जायेगा..... २४

* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केवल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अराधना
रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

मंगलमय
www.ashram.org/live पर उपलब्ध

प्रियो नो अस्तु विश्पतिः । 'प्रजाओं का रक्षक प्रभु हमारा प्रिय हो ।' (सामवेद)

महान बनानेवाली १२ सरल बातें

– पूज्य बापूजी

महान बनने के लिए बिल्कुल सरल १२ बातें हैं –

(१) नियम : भगवान के ध्यान, जप का नियम हो।

(२) सच बोलना : सत्य बोलने से बुद्धि विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न होती है।

(३) शम : शम माने मन को रोकना। कोई भी वेग आ जाय तो जरा रुको, विचार करो। क्रोध आ जाय, काम आ जाय, चिंता आ जाय तो जरा रुको। इससे आप महान बनने में सफल हो जाओगे।

(४) तपस्या : पढ़ाई करने जाते हो और थोड़ा कष्ट सहना पड़े अथवा मंदिर में, सत्संग में जाते हो और थोड़ा कष्ट सहना पड़े तो वह तपस्या हो जाती है। अपने जीवन में सहनशक्ति लाना यह तप है।

(५) शौच : नहा-धोकर शरीर को पवित्र रखें और बुराई से रहित करके अपने मन को पवित्र रखें और भगवान का नाम जप के अपनी वाणी को शुद्ध रखें।

(६) संतोष : खाने-पीने, कपड़े-लत्ते में धनी विद्यार्थी को या धनी लोगों को देखकर असंतुष्ट नहीं होना क्योंकि वे भी भोग के यहीं रह जायेंगे। ज्यादा भोगी तो ज्यादा बीमार और ज्यादा चिंता में रहते हैं। अपने को भोग कम मिले तो संतोष रखें और आय का कुछ हिस्सा सत्कर्म में लगाना ही चाहिए। जो आमदनी का कुछ हिस्सा सत्कर्म में नहीं लगाते हैं उनको बीमारी और दूसरी मुसीबतें आकर वह धन खर्च करवा देती हैं।

(७) लज्जा : अपने जीवन में लज्जा होनी चाहिए। बुरी बात बोलने में, बुरी संगति करने में, बुरा कर्म करने में, बुरी किताबें पढ़ने में, बुरे चलचित्र या वेबसाइट देखने में अपने को लज्जा आनी चाहिए, शर्म आनी चाहिए अर्थात् उनसे

ऐसे करुणा के सागर थे शाहों के शाह

लीलाशाह !

ब्रह्मलीन भगवत्पाद
साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज
का महानिर्वाण दिवस : २३ नवम्बर

साँईं श्री लीलाशाहजी करुणा की साक्षात् मूर्ति थे। किसीकी भी पीड़ा देखकर उनका हृदय भर आता था और उसका दुःख दूर करने में वे लग जाते थे । वल्लभग्राम के मुखिया मेवाराम गुरनानी द्वारा बताये गये साँईं लीलाशाहजी महाराज की करुणा-कृपा के कुछ प्रसंग :

राजस्थान के अलवर जिले में वल्लभग्राम का निर्माण सिंध से स्थानांतरित होकर आये सिंधी भाइयों ने किया परंतु इस गाँव की उन्नति साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज की प्रेरणा, सहायता व आशीर्वाद से ही हुई।

सरकार द्वारा खेती और मकान हेतु जमीन दी गयी थी पर वह जमीन रहने लायक नहीं थी, नदियों में पानी भी नहीं था। बारिश के पानी द्वारा ही खेती करनी थी तथा जमीन को उपजाऊ बनाना था । इसलिए २०० में से ७५ परिवार नाउम्मीद होकर दूसरे गाँवों की ओर चले गये। बचे हुए १२५ परिवारों ने सरकार से माँग की कि हमारी बंजर जमीन के बदले यहाँ से चले गये परिवारों की उपजाऊ जमीन हमें मिल जाय पर सरकार ने माँग नहीं मानी। अतः वे परिवार भी पलायन का सोचने लगे।

पूज्य साँईं श्री लीलाशाहजी के प्रति हम सबकी अटूट श्रद्धा थी। स्वामीजी दुर्गापुर कैम्प (जयपुर) में आये हुए थे। मैंने अपने भाई व मित्र को उन्हें लेकर आने के लिए वहाँ भेजा। स्वामीजी तो शरणार्थियों को पुनः स्थापित करने का काफी प्रयास कर रहे थे अतः वे आ गये। स्वामीजी ने उपदेश दिया : ''आकाशवाणी हुई है कि पलायन मत करो, सरकारी लोगों के ऊपर जो बड़ी सरकार - परमात्मा है, उस पर तुम भरोसा रखो। परमात्मा के भरोसे तुम सरकार से फिर जमीन बदलने के

आपकी भी संतों जैसी दिवाली हो !

दीपावली पर्व : १३ से १६ नवम्बर

- पूज्य बापूजी

यह दिवाली ऋषियों के उम्दा दृष्टिकोण को समझकर उनकी उस उदात्त नीति से हृदय को विशाल बनानेवाली दिवाली बना लो ! दीन-दु:खियों के प्रति दया, बच्चों के प्रति स्नेह और बुजुर्गों के प्रति नम्रता रख के भूखे को अन्न, प्यासे को पानी, स्नेहरहित को स्नेह, अपमानित को मान व निराश्रित को आश्रय देकर, भूले हुए को मार्ग दिखा के, अनपढ़ को विद्या सिखा के, साधु-संतों को नम्रता एवं प्रेम से प्रसन्न करके अपने हृदय में, अपनी शरीररूपी अयोध्या में श्रीरामजी का आगमन करो।

सत्त्व, रज और तम - इन तीन गुणों में रहनेवाला, १० इन्द्रियों में रमण करनेवाला, देहरूपी अवध में जीनेवाला यह जीवरूपी दशरथ रामराज्य की इच्छा करता है परंतु कैकेयी विघ्न डालती है; कैकेयी माने कीर्ति की इच्छा। जब यह जीव तमस के, कीर्ति के अधीन होता है तो रामराज्य होने के बजाय राम-वनवास हो जाता है। वे ही राम जब रावण, मेघनाद आदि आसुरी शक्तियों को परास्त करके अयोध्या आते हैं अर्थात् राम की शक्ति, चेतना नीचे के केन्द्रों में जाकर आसुरी अहंकार आदि को परास्त करके जब फिर ऊर्ध्वगामी हो के आती है तब जीव को, अवधवासियों को एहसास होता है कि रामजी आये हैं। तुम्हारे तनरूपी अवध में रामराज्य हो। जैसे अयोध्या में दीये जगमगाये थे ऐसे ही तुम्हारे दिल में भी ज्ञान के दीये जगमगायें ऐसा संकल्प करो।

दीपावली का दूसरा दिन अर्थात् (गुजराती विक्रम संवत् के अनुसार) नूतन वर्ष का प्रथम दिन... वर्ष का प्रथम दिन जैसा जाता है वैसे ही दूसरे दिन भी प्राय: होने लगते हैं। तो प्रभातकाल को उठें और बिस्तर पर ही ध्यानमग्न हो जायें। नींद में से उठने के बाद फिर लेट जायें और कुछ न करें, कुछ न करें बस। जैसे भगवान विष्णु क्षीरसागर में योगनिद्रा में लेटते हैं, अपने-आपमें - अपने स्वरूप में आराम पाते हैं, ऐसे ही सुबह नींद खुलने पर हृदय में स्नेह, धन्यवाद और प्रेम भरते हुए तुम

माँ महँगीबाजी

के पावन संस्मरण

ब्रह्मलीन मातुश्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस : ११ नवम्बर

पूज्य बापूजी की मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी (अम्माजी) का जीवन ऐसे सद्गुणों से ओतप्रोत था जिनका अनुसरण कर व्यक्ति अपने जीवन को उन्नत कर सकता है। अम्माजी की सेविका सजनी बहन द्वारा बताये गये कुछ संस्मरण :

यह कुंजी अपनायें, घर का वातावरण स्वर्गीय बनायें

अम्माजी का एक नियम था कि वे प्रतिदिन सुबह उठकर जेठ और जेठानियों को प्रणाम करती थीं। कई बार तो एक ही जेठ को २-२ बार प्रणाम कर लेती थीं क्योंकि हिन्दू संस्कृति में ससुर व जेठ के सामने घूँघट डालने का रिवाज है। अतः मर्यादा और शील के कारण घूँघट डालकर रखती थीं तथा दोनों जेठ एक जैसे लगते थे तो अक्सर एक को दो बार प्रणाम कर लेती थीं तो वे बोलते : ''अरे ! अभी तो प्रणाम किया था।''

अम्माजी घर का पूरा काम करती थीं परंतु घर के बड़े-बुजुर्गों ने कभी उनकी ऊँची आवाज नहीं सुनी थी। घर के सब लोग तथा पड़ोसी भी उनसे बहुत खुश रहते थे। जो जेठानी अम्माजी से ईर्ष्या करती थी उसके प्रति भी उनके मन में नफरत या द्वेष नहीं था। ऐसी दिव्यात्मा की कोख से ही संत अवतरित

मुंडन संस्कार क्यों ?

हिन्दू धर्म के १६ संस्कारों में ८वाँ संस्कार होता है मुंडन संस्कार। इसमें शिशु का पहली बार केश-मुंडन किया जाता है। इसे चूड़ाकरण संस्कार भी कहते हैं। इसमें बालक का मुंडन करके चूड़ा अर्थात् शिखा धारण करायी जाती है। यह संस्कार बालक के गार्भिक दोषों को दूर करने तथा उसकी आयु, तेज व बल की वृद्धि हेतु किया जाता है। इसका उद्देश्य जन्म के समय उत्पन्न अपवित्र बालों को हटाकर बालक को प्रखर बनाना है। इससे बालक का सिर मजबूत तथा बुद्धि तेज होती है।

मनुस्मृति के अनुसार बालक के जन्म से पहले या तीसरे वर्ष में यह संस्कार करना चाहिए। महर्षि अत्रि के अनुसार 'प्रथम वर्ष में चौल (मुंडन) संस्कार करने से दीर्घायुष्य तथा ब्रह्मवर्चस् (ब्रह्मतेज) प्राप्त होता है। तीसरे वर्ष में करने से वह समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है।' महर्षि आश्वलायन, बृहस्पति एवं देवर्षि नारदजी आदि के मतानुसार यह संस्कार तीसरे, पाँचवें, सातवें, दसवें और ग्यारहवें वर्ष में भी किया जा सकता है।

यदि बालक की माता गर्भवती हो तो बालक का मुंडन करना सर्वथा अनुचित है। माता के गर्भवती हुए यदि मुंडन किया जायेगा तो गर्भ पर अथवा उस बालक पर कोई विपत्ति हो जाना सम्भव है। यदि बालक के ५ वर्ष पूर्ण हो गये हों तो फिर माता का गर्भ किसी प्रकार का दोष नहीं कर सकता अर्थात् ७वें वर्ष यदि माता गर्भवती भी हो तब भी बालक का मुंडन कर देना ही उचित है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस संस्कार को शुभ मुहूर्त में करने का विधान है। यह वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न होता है। अग्नि पुराण में आता है कि 'माघ आदि ६ मासों में अर्थात् माघ से लेकर आषाढ़ तक प्रथम क्षौर-कर्म (बालक का मुंडन) कराना शुभ कहा गया है। श्रावण आदि मासों में मुंडन संस्कार नहीं कराना चाहिए।'

सुरक्षा वटी

यह वटी रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ाकर सर्दी, जुकाम, बुखार आदि संक्रमणजन्य रोगों से सुरक्षा करती है। पाचनशक्ति बढ़ाकर साररूप सप्तधातुओं के निर्माण में मदद करती है। संक्रामक रोग होने पर इसके सेवन से शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होता है।

कोष्ठशुद्धि कल्प (पेट की गोली)

यह उत्तम कृमिनाशक है। ५०% से अधिक बच्चों के पेट में कृमि पाये जाते हैं अतः बच्चों हेतु कोष्ठशुद्धि कल्प विशेष हितकर है। कुछ दिन तक इसका नियमित सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट होकर कृमिजन्य शय्यामूत्र, मुँह से लार टपकना, भूख न लगना, मुँह पर सफेद निशान, तुतलाना, कमजोरी, बच्चों का वजन न बढ़ना आदि लक्षण दूर हो जाते हैं।

स्मृति व दिमागी शक्ति वर्धक रसायन

शंखपुष्पी सिरप

स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु यह एक दिव्य औषधि है। साथ ही यह मानसिक तनाव, थकावट अनुभव करना, सहनशक्ति का अभाव, चिड़चिड़ापन, निद्राल्पता, मन की अशांति, चक्कर आना तथा उच्च रक्तचाप (hypertension) आदि रोगों में भी लाभप्रद है।

अच्युताय मलहम

यह दाद, खाज, खुजली आदि चमड़ी के रोगों तथा फंगल व बैक्टीरियल इन्फेक्शन में लाभकारी है, साथ ही पैरों की कटी-फटी एड़ियों के लिए बहुत उपयोगी है।

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी, सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि समस्याओं को दूर करता है। बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है। दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है।

नीम तेल

यह घाव को शीघ्र भरनेवाला, बालों के लिए हितकारी, कृमिनाशक व चर्मरोगों में उपयोगी है। दाद, खाज, खुजली, शरीर पर लाल चकत्ते निकलना, नये एवं पुराने घाव, हाथीपाँव आदि में लाभकारी है।

स्पेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।

उपरोक्त उत्पादों की प्राप्ति की जानकारी देखें आवरण पृष्ठ ४ के अंत में।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2018-20
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2020
LWPP No. PMG/HQ/045/2018-20
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2020)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाली हैं । जीर्णज्वर, वीर्यदोष, मूत्रसंबंधी रोग, स्वप्नदोष आदि में लाभदायी हैं । ये बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं रोगों से रक्षा करती हैं । रोगी-निरोगी सभी इन्हें ले सकते हैं । निरोगता व दीर्घ आयुष्य हेतु ४० वर्ष की उम्र के बाद इनका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए ।

दंत सुरक्षा तेल

इस तेल को मसूड़ों पर मलने से मसूड़ों से खून आना, पायरिया, मसूड़ों का दर्द व सूजन, दाँतों की सड़न व दर्द तथा दाँतों की अन्य प्रकार की तकलीफों में लाभ होता है ।

हफ्ते में दो दिन नियमित रात को सोते समय मसूड़ों पर तेल लगाकर सोने से दाँत एवं मसूड़े स्वस्थ व मजबूत बनते हैं ।

त्रिफला चूर्ण

यह आँखों की सूजन, लालिमा, दृष्टि की कमजोरी, कब्ज, मधुमेह (diabetes), मूत्ररोग, त्वचा-विकार, जीर्णज्वर व पीलिया में लाभदायक है ।

एलोवेरा जेल

यह त्वचा को कोमल बनाता है और उसमें निखार लाता है । त्वचा की कील-मुँहासे, काले दाग-धब्बे व झुर्रियों से रक्षा करता है । यह रूखी व तैलीय त्वचा दोनों के लिए हितकारी है । त्वचा को हानिकारक किरणों व प्रदूषण से बचाता है ।

दंतमंजन

दाँतों के लिए उपयोगी विशिष्ट औषधियों से बना यह दंतमंजन आपके दाँतों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है । यह दाँतों को साफ करता है एवं मसूड़ों को मजबूत रखता है । इसके नियमित उपयोग से मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से खून निकलना, दाँतों का दर्द, दाँतों का हिलना, दाँतों की सड़न आदि दंत-रोगों से रक्षा होती है ।

आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध सामग्री का सचित्र रंगीन विवरण
उत्पादों के वजन, मूल्य, लाभ आदि के साथ...

हरि ॐ उत्पाद-विवरण पुस्तिका

इस पुस्तिका में समाविष्ट हैं : ✲ बल, बुद्धि, आयु, कांति एवं स्वास्थ्य वर्धक तथा विभिन्न रोगों में लाभदायक आयुर्वेदिक औषधियाँ ✲ साधना, सत्संग, पूजा व स्वाध्याय के लिए उपयोगी सामग्री ✲ विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री ✲ अन्य दैनंदिन आवश्यक वस्तुएँ तथा और भी बहुत कुछ...

अतः अब घर बैठे आवश्यक सामग्री प्राप्त करना हो गया और भी आसान !
बस यह पुस्तिका देखें और मँगवायें मनचाहा उत्पाद अपने घर पर !

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७३०, ९२१८१११२३३. ई-मेल : contact@ashramestore.com